BA-(H)
मैथिली प्रतिष्ठा
परिचायिका/

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि सहायक प्राध्यापक) जी/T
मैथिली विभाग
V.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (Lnmu)

धूर्तसमागम (ज्योतिरीश्वर Lecture-3) :-

ई प्रहसन थिक। एकर दू गीत रूप प्राप्त अछि - एक संस्कृत-प्राकृतमे, दोसर मैथिली-गीत युक्त संस्कृत प्राकृतको प्रो० रमानाथ झा दोसर रूपकें मैथिली-कृति नहि मानैत छथि किन्तु डॉ० जयकान्त मिश्र एकरा मैथिली-कृति स्वीकार करैत कीर्तनिया नाटकक आदि रूप एकरा मानलनि अछि। एकर संस्कृत-प्राकृतवला रूपमें पाण्डुलिपि उपलब्ध छल, किन्तु, मैथिली धूर्तसमागमक अनुसंधान डॉ० जयकान्त मिश्र 1956 ई० में नेपाल जाकऽ कयलनि। ई खंडित अछि। एहिमे (20/26 गोट मैथिली गीत अछि। एकर गीतसभ कविक दृष्टिएँ उत्कृष्ट नहि कहल जा सकैछ। हास्यरसेन ओतप्रोत एहि प्रहसनमे एक संन्यासीक कथा अछि जे स्वयं नायिका-विलासी अछि। ओकर शिष्य सेहो छैक। दुनू भिक्षाटन लेल निकलैत अछि। कोनो कारणे गुरु-शिष्यमे विवाद भऽ जाइत छैक। एकर मध्यस्थ करबाक हेतु असज्जाति मिश्र नामक एक धूर्त आबैत अछि। तीनू धूर्त

Scanned by TapScanner

धूर्तता करबासँ बाज नहि अबैछ। अन्तर्जाति मिश्र बाढ़ल जाइछ। अन्तमे विदूषकद्वारा मुक्त करैछ। डॉ० प्रेमशंकर सिंहक अनुसार:- "एहिमे लोकजाति एवं दैनन्दिन जीवनक प्रचलित विभिन्न लोकव्यवहारक सुन्दर चित्र अछि। प्रत्येक पात्रक नाम तेहन तद्गुणानुरूप एवं हास्यसँ युक्त अछि। गीतमे किछु तँ संस्कृत श्लोकक पद्यानुवाद मात्र अछि तथा शेष स्वतंत्र भावकेँ लऽकऽ लिखल गेल अछि। प्रवेश-गीतक माध्यमे पात्रक व्यवहार एवं स्वभावक परिचय भेटैछ। ई जन-जीवनक तत्कालीन स्थितिपर प्रकाश दैछ।" एकर भाषा वर्णरत्नाकरक भाषासँ भिन्न बुझि पड़ैछ। तेँ, प्रो० रमानाथ झा एकरा ज्योतिरीश्वरक कृति मानबामे शंका व्यक्त कयने छथि।

जे हो, ज्योतिरीश्वर मैथिली साहित्यक सर्वाधिक प्राचीन ग्रन्थकार छथि, ताहिमे संदेह नहि। किन्तु हिनक ग्रन्थक भाषा, ओकर प्रवाह, वर्णन-कौशल आदिसँ स्पष्ट होइत अछि जे हिनका समयमे अबैत-अबैत मैथिली भाषा परिपक्व भऽ गेल छल।

Samrjit Kumar